वर्णमाला

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक वर्णमाला का एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से इसका वाचन करवाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से वर्णमाला सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

वर्णों के व्यवस्थित रूप को वर्णमाला कहते हैं। संस्कृत वर्णमाला में लृ, ॠ ये दो वर्ण गिने जाते हैं। लृ का प्रयोग केवल वैदिक संस्कृत में मिलता है।

स्वर और व्यंजन–संस्कृत में 13 स्वर और 33 व्यंजन होते हैं–

स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है। व्यंजन वर्णों का उच्चारण स्वर की सहायता से होता है; जैसे– क् + अ = क, ग् + अ = ग

प्रत्येक व्यंजन वर्ण को उसके साथ 'अ' जोड़कर बोला जाता है। स्वर जुड़ने के बाद व्यंजन वर्ण के नीचे लिखा हल चिह्न लुप्त हो जाता है।

अयोगवाह– अनुस्वार (ं) तथा विसर्ग (:) अयोगवाह ध्वनियाँ कहलाती हैं।

अनुस्वार (ं)–वर्ण के ऊपर बिंदु लगाया जाता है; जैसे– अंश, कंस आदि।

विसर्ग (:)–विसर्ग (:) शब्द के बाद लगाया जाता है और इसका उच्चारण 'ह्' जैसा ही होता है; जैसे– नरः, बालकः, सिंह आदि।

मात्रा–'अ' के अलावा कोई भी स्वर जब व्यंजन वर्ण के साथ जोड़ा जाता है, तो वह मात्रा के रूप में जुड़ता है; जैसे–

क् + आ = का, क् + इ = कि

क् + उ = कु, क् + ऊ = कू आदि।

जिस शब्द के अंत में जो स्वर जुड़ा हो, वह स्वर उसी स्वर से अंत होने वाला माना जाता है।

जैसे– बालक– ब् + आ + ल् + अ + क् + अ (अकारान्त)

लता– ल् + अ + त् + आ (आकारान्त)

संयुक्त व्यंजन–जब एक स्वररहित व्यंजन का मेल, दूसरे व्यंजन से होता है, तब वह संयुक्त व्यंजन बनता है; जैसे–

क् + ष् + अ = क्ष (क्षमा)

त् + र् + अ = त्र (मित्र)

ज् + ञ् + अ = ज्ञ (ज्ञान)

श् + र् + अ = श्र (श्रम)

वर्ण-विच्छेद–वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है; जैसे– मुनि = म् + उ + न् + इ।

वर्ण-संयोग–वर्णों को जोड़कर शब्द बनाने को वर्ण-संयोग कहते हैं; जैसे– प् + उ + ष् + प् + अ + म् = पुष्पम्।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) पाँच (ख) तैंतीस (ग) स्वर (घ) विसर्ग
2. (क) अ (ख) ब (ग) ब (घ) ब
3. (क) त्रिकोण, त्रिशूल (ख) श्रमिक, श्रवण
   (ग) ज्ञानी, ज्ञान (घ) क्षीर, क्षमता
4. (क) न् + आ + म् + अ
   (ख) र् + अ + म् + आ
   (ग) नदी
   (घ) नमस्ते

1 फलानि शाकानि च
(फल और सब्जियाँ)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक फल और सब्जियों का चित्र सहित एक चार्ट तैयार करें।

- इस पाठ का सी.डी. से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से संस्कृत में दो-दो फल-सब्जियों के नाम लिखवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

आम्रम्	–	आम
नारङ्म	–	संतरा
मधुकर्कटी	–	पपीता
सेवम्	–	सेब
अनानसम्	–	अनानास
रक्तफलम्	–	टमाटर
वृन्ताकम्	–	बैंगन
मरीचिका	–	मिर्च
आलूकम्	–	आलू

2 पशवः पक्षिणः च
(पशु और पक्षी)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक पशु और पक्षियों का चित्र सहित एक चार्ट तैयार करें।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से संस्कृत में दो-दो पशु-पक्षियों के नाम लिखवाएँ।

- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

सिंहः	–	शेर
गजः	–	हाथी
व्याघ्रः	–	बाघ
हरिणः	–	हिरण
उष्ट्रः	–	ऊँट
मयूरः	–	मोर
काकः	–	कौआ
शुकः	–	तोता
कपोतः	–	कबूतर

3 पुष्पाणि वृक्षाः च
(फूल और पेड़)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक फूलों और पेड़ों का चित्र सहित एक चार्ट तैयार करें।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से संस्कृत में दो-दो फूल-पेड़ों के नाम लिखवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

कमलम्	–	कमल
सूर्यकान्तिः	–	सूरजमुखी
पाटलपुष्पम्	–	गुलाब
सेवन्तिका	–	गेंदा
आम्रः	–	आम
कदली	–	केला
निम्बः	–	नीम
वटः	–	बरगद
नारिकेलः	–	नारियल

4 अस्माकम् प्रकृति
(हमारी प्रकृति)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक प्रकृति का एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से सूरज, तारे, चाँद आदि के बारे में पूछें।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से सूरज, चाँद, तारे, बादल आदि के नाम संस्कृत में लिखवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

चन्द्रः	–	चाँद
भानुः	–	सूर्य
मेघः	–	बादल

जलम्	–	जल
पर्वतः	–	पहाड़
तड़ागः	–	तालाब
नभः	–	आकाश
तारकः	–	तारा

5

शरीरस्य अङ्गानि
(शरीर के अंग)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक प्रकृति के अंगों का एक चार्ट तैयार करें।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से दो-दो शरीर के अंगों के नाम संस्कृत में लिखवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

शिरः	–	सिर
नेत्रम्	–	आँख
कर्णः	–	कान
नासिका	–	नाक
ओष्ठः	–	होठ
ग्रीवा	–	गला
स्कन्धः	–	कन्धा
भुजा	–	बाजू
वक्षस्थलम्	–	छाती

उदरः	–	पेट
कफोणिः	–	कोहनी
हस्तः	–	हाथ
अंगुल्य	–	उँगलियाँ
जानु	–	जङ्घा
नलकिनी	–	टाँग
पादः	–	पैर

6 गृहवस्तूनि
(घर की वस्तुएँ)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक घर की वस्तुओं का चित्र सहित एक चार्ट तैयार करें। छात्रों से इसका वाचन भी करवाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से दो-दो वस्तुओं के नाम संस्कृत में लिखवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

वातायनम्	–	खिड़की
रज्जुः	–	रस्सी
आसन्दी	–	कुरसी
समाचारपत्रम्	–	समाचार-पत्र
घटिका	–	घड़ी
दीपः	–	दीया (दीपक)
सिक्थवर्तिका	–	मोमबत्ती

गणकयन्त्रम्	–	गणना-यंत्र
स्थाली	–	थाली, बटलोई
विद्युतव्यजनम्	–	पंखा
शीतकम्	–	फ्रिज
मिश्रकम्	–	मिक्सर
समीकरणम्	–	इस्तरी
क्षालनयन्त्रम्	–	धुलाई की मशीन
दूरदर्शनम्	–	टेलीविज़न
दूरभाष:	–	टेलीफ़ोन
चलदूरवाणी	–	चलदूरभाष
संगणकम्	–	कंप्यूटर

7 संख्यावाचिन: शब्दा:

(संख्यावाची शब्द)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक संख्यावाची शब्दों का एक चार्ट तैयार करें। छात्रों से इसका वाचन करवाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह से 1 से 10 तक संस्कृत में गिनती लिखवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

एक:	–	एक
द्वौ	–	दो
त्रय:	–	तीन

चत्वारः	–	चार
पञ्च	–	पाँच
षट्	–	छह
सप्त	–	सात
अष्ट	–	आठ
नव	–	नौ
दश	–	दस

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) एकः (ख) त्रयः (ग) चत्वारः (घ) पञ्च
(ङ) षट् (च) दश (छ) सप्त (ज) नव

8 सः/एषः

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक सः/एषः (पुल्लिंग) और एषा/सा (स्त्रीलिंग) सर्वनाम शब्दों का उदाहरण सहित चार्ट तैयार करें।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से पाठ संबंधी एक-एक वाक्य संस्कृत में सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

यह बालिका है। यह बालक है। यह किसान है। यह वृक्ष है। यह पर्वत है। यह चिकित्सक है। यह चिकित्सिका है। वह छात्रा है। वह छात्र है। यह अध्यापिका है। वह अध्यापक है। वह कुम्हार है। यह विद्यालय है। यह माली हैं। वह कली है। वह पिता है। यह माता हैं। यह संदूक है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) एषः (ख) एषाः (ग) सा (घ) एषा (ङ) सः
2. पुल्लिंग शब्दाः – नरः अध्यापकः बालकः मालाकारः
   स्त्रीलिंग शब्दाः – शिक्षिका कलिका छात्रा अम्बा
3. 1. सः रक्षकः 2. एषा अध्यापिका 3. एषा मञ्जूषा
   4. सा अजा 5. एषः पादपः 6. सः छात्रः

9 धातुः (क्रिया)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक धातुओं का एक चार्ट तैयार करें। छात्रों से इसका वाचन करवाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से संस्कृत में एक-एक वाक्य सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

वह जाता है। वह पढ़ती है। माला हँसती है।
छात्र लिखता है। राधा खेलती है। बालक दौड़ता है।
यह संदीप है। संदीप घूमता है। वह घूमता है।
यह राहुल है। राहुल खाता है। वह खाता है।
यह श्यामा है। श्यामा पीती है। वह पीती है।
क्या राघव गाता है। हाँ, वह गाता है।
यह अध्यापक है। अध्यापक क्या करता है?
वह पढ़ाता है। यह वृक्ष है। वह फलता है।
क्या वह पढ़ता है? हाँ, वह पढ़ता है।

यह मालती है। मालती क्या करती है? वह नमस्कार करती है।
क्या वह खाता है? नहीं, वह नहीं खाता है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) सः (ख) सः (ग) सा (घ) सा
2. 1. अम्बा पचति 2. श्यामा पिबति 3. सः खादति 4. अध्यापकः पाठयति
3. (क) कन्या (ख) अध्यापकः (ग) छात्रः (घ) बालिका
4. (क) अम्बा पचति। (ख) गौरवः धावति।
(ग) श्यामा लिखति। (घ) सा हसति।

10 तौ/ते

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक द्विवचन के बारे में छात्रों को उदाहरण सहित समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से संस्कृत में एक-एक वाक्य सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

दो बालक नमस्कार करते हैं।
वे दो क्या करते हैं?
वे दो नमस्कार करते हैं।
मनीषा हँसती है। श्वेता हँसती है।
मनीषा और श्वेता हँसती हैं।

वे दोनों हँसती हैं।
नलिन दौड़ता है।
आकाश दौड़ता है।
नलिन और आकाश दौड़ते हैं।
वे दो दौड़ते हैं।
रागिनी पढ़ती है। निशा पढ़ती है।
रागिनी और निशा पढ़ती हैं।
वे दोनों पढ़ती हैं।
वे दो क्या करते हैं?
वे दो हँसते हैं।
वे दोनों क्या करते हैं?
वे दो लिखते हैं।
वे दो लड़कियाँ क्या करती हैं?
वे दोनों खाती हैं।
वे दो क्या करती हैं?
वे दोनों पकाती हैं।
वे दोनों क्या करते हैं?
वे दो खेलते हैं।
वे दोनों क्या करती हैं?
वे दोनों जाती हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) छात्रौ गच्छतः।
   (ख) अध्यापिका पाठयति।
   (ग) ते पचतः।
   (घ) सः लिखति।
2. (क) ते (ख) तौ (ग) तौ (घ) ते
3. 1. तौ लिखतः 2. तौ धावतः 3. सः कृषकः 4. ते नृत्यतः
4. (क) तौ धावतः। (ख) ते गच्छतः।
   (ग) तौ हसतः। (घ) ते खेलतः।

11 ते/ता:

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक छात्रों को ते और ता: संस्कृत शब्दों के बारे में समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से पाठ से संबंधित दो-दो वाक्य सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

बालक क्या करते हैं?
वे सब खेलते हैं।
बालिकाएँ क्या करती हैं?
वे सब गाती हैं?
छात्र क्या करते हैं?
वे सब पढ़ते हैं?
बालिकाएँ क्या करती हैं?
वे सब नमस्कार करती हैं?
लड़कियाँ क्या करती हैं?
वे सब हँसती हैं।
बालक क्या करते हैं?
वे सब लिखते हैं?
वे सब खाते हैं।
वे सब पकाती हैं।
वे सब घूमते हैं।

पक्षी कूकते हैं।
वे सब कूकते हैं।
बालिकाएँ नाचती हैं।
वे सब नाचती हैं।
बालक दौड़ते हैं।
वे सब दौड़ते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ते (ख) सः (ग) ते (घ) ते (ङ) ताः
2. (क) ते लिखन्ति।
   (ख) सः पठति।
   (ग) ताः नृत्यन्ति
   (घ) तौ गच्छतः।
3. (क) ते हसन्ति।
   (ख) ताः खेलन्ति।
   (ग) ते वदन्ति
   (घ) ते पचन्ति।
4. 1. ते पठन्ति। 2. ते खेलन्ति। 3. ताः हसन्ति। 4. सा धावति।

12 त्वम्/अहम्

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक छात्रों को त्वम् और अहम् सर्वनाम शब्दों के बारे में समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन कराएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। छात्रों से आपस में त्वम् और अहम् शब्दों पर वाक्य लिखवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

क्या तुम नमस्कार करते हो?
हाँ, मैं नमस्कार करता हूँ।
क्या तुम चलते हो?
नहीं, मैं दौड़ता हूँ।
तुम क्या करते हो?
मैं पढ़ता हूँ।
क्या तुम शाम को भी पढ़ते हो।
हाँ, मैं शाम को भी पढ़ता हूँ।
तुम क्या करते हो?
मैं खाता हूँ।
क्या तुम पकाते हो?
नहीं, मैं नहीं पकाता हूँ।
क्या तुम जाते हो?
हाँ, मैं जाता हूँ।
तुम कहाँ जाते हो?
मैं वहाँ जाता हूँ।
तुम क्या करते हो?
मैं खेलता हूँ।
क्या तुम हर रोज खेलते हो?
नहीं, मैं हर रोज नहीं खेलता हूँ।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) पचामि (ख) गच्छसि (ग) धावति (घ) पठसि (ङ) लिखामि
2. (क) अह्म क्रीडामि।
   (ख) त्वम् किं करोषि?
   (ग) ताः धावन्ति।
   (घ) अह्म नमामि।
   (ङ) त्वम् खादसि।
   (च) ते गच्छन्ति।
3. (क) सा (ख) त्वम् (ग) अहम् (घ) तौ (ङ) ते
4. (क) कन्याः वदन्ति।
   (ख) अहम् नमामि।
   (ग) सः गच्छति।
   (घ) तौ पठतः
   (ङ) त्वम् किम् करोषि?

13

युवाम्/आवाम्

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक छात्रों को युवाम् और आवाम् सर्वनाम शब्दों के बारे में समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से पाठ से संबंधित दो-दो वाक्य बनवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

क्या तुम दोनों चलते हो?
नहीं, हम दोनों दौड़ते हैं।
क्या तुम दोनों नहीं जाते हो?
नहीं, हम दोनों जाते हैं।
तुम दोनों क्या करते हो?
हम दोनों खाते हैं।
क्या तुम दोनों सुबह भी खाते हो?
हाँ, हम दोनों सुबह भी खाते हैं।
क्या तुम दोनों बोलती हो?
नहीं, हम दोनों पढ़ती हैं।
क्या तुम दोनों भी पकाती हो?
हाँ, हम दोनों पकाती हैं।
क्या तुम दोनों खेलती हो?
हाँ, हम दोनों खेलती हैं।
क्या तुम दोनों शाम को भी खेलती हो?

हम दोनों शाम को भी खेलती हैं।

तुम दोनों क्या करते हो?

हम दोनों लिखते हैं।

तुम दोनों कहाँ बैठते हो?

हम दोनों यहाँ बैठते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) युवाम् (ख) ताः (ग) आवाम् (घ) युवाम् (ङ) युवाम्
2. (क) पचावः (ख) खेलसि (ग) खादति (घ) चलथः (ङ) नमामि
3. (क) अहम् चलामि। (ख) तौ खादतः।
   (ग) त्वम् कुत्र गच्छसि। (घ) युवाम् धावथः।
   (ङ) बाला पठति। (च) आवाम् खेलावः
4. (क) ते खादन्ति (ख) तौ पठतः
   (ग) आवाम् खेलावः (घ) त्वम् गच्छसि
   (ङ) युवाम् पचथः (च) अहम् नमामि।

14 यूयम्/वयम्

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक छात्रों को यूयम् और वयम् सर्वनाम शब्दों के बारे में समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से यूयम् और वयम् पर दस-दस वाक्य बनवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

तुम सब कहाँ जाते हो?

हम सब बाहर जाते हैं।
वहाँ तुम सब क्या करते हो?
हम सब वहाँ खेलते हैं।
तुम सब कब घूमते हो?
हम सब प्रातः घूमते हैं।
क्या तुम सब सुबह भी नमस्कार करते हो?
हाँ, हम सब सुबह नमस्कार करते हैं।
क्या तुम सब खेलते हो?
हाँ, हम सब खेलते हैं।
क्या तुम सब प्रातः दौड़ते हो?
नहीं, हम सब प्रातः नहीं दौड़ते हैं।
क्या तुम सब बोलती हो?
हाँ, हम सब बोलती हैं।
क्या तुम सब भी चलती हो?
हाँ, हम सब भी चलती हैं।
तुम सब क्या करते हो?
हम सब पढ़ते हैं।
क्या तुम सब लिखते भी हो?
नहीं, हम सब नहीं लिखते हैं।
तुम सब क्या करती हो?
हम सब नाचती हैं।
क्या तुम सब गाती भी हो?
हाँ, हम सब गाती हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) यूयम् (ख) वयम् (ग) ते (घ) यूयम् (ङ) वयम्
2. (क) अपि – भी (ख) त्वम् – तुम (ग) अहम् – मैं
   (घ) यूयम् – तुम सब (ङ) वयम् – हम सब
3. (क) तौ पठतः। (ख) त्वम् चलसि।
   (ग) वयम् पठामः। (घ) युवाम् गच्छथः।
4. (क) आम्, वयम् तत्र खेलामः।
   (ख) न, अहम् न धावामि।
   (ग) न, वयम् पठामः।
   (घ) आम्, वयम् खेलामः।

15 कः कौ, के/का, के, काः

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक छात्रों को संस्कृत के स्त्रीलिंग-पुल्लिंग प्रश्नवाचक शब्दों के बारे में समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्रों से पाठ से संबंधित दस-दस संस्कृत वाक्य बनवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

यह कौन है?
यह कोयल है।
वह कूकती है।
ये दोनों कौन हैं?
ये दोनों कोयलें हैं।
वे दोनों कूकती हैं।
ये सब कौन हैं?
ये सब कोयलें हैं।
वे सब कूकती हैं।
यह कौन लिखता है?
यह छात्र लिखता है।
वह लिखता है।
ये दो कौन लिखते हैं?
ये दो छात्र लिखते हैं।
वे दोनों लिखते हैं।
ये कौन लिखते हैं?
ये सब छात्र लिखते हैं।

वे सब लिखते हैं।
तुम कौन हो?
मैं हिरण हूँ।
मैं चरता हूँ।
तुम दोनों कौन हो?
हम दोनों हिरण हैं।
हम दोनों चरते हैं।
तुम सब कौन हो?
हम सब हिरण हैं।
हम सब चरते हैं।
तुम कौन हो?
मैं कबूतर हूँ।
तुम दोनों कौन हो?
हम दोनों तोते हैं।
तुम सब कौन हो?
हम सब कौए हैं।
यह कौन है?
यह शेर है।
यह गरजता है।
ये दो कौन हैं?
ये दोनों घोड़े हैं।
ये दोनों दौड़ते हैं।
ये सब कौन हैं?
ये सब कोयलें हैं।
ये सब कूकती हैं।
तुम कौन हो?
मैं खरगोश हूँ।
मैं दौड़ता हूँ।
तुम दो कौन हो?
हम दोनों हाथी हैं।
हम दोनों चलते हैं।
तुम सब कौन हो?
हम सब मोर हैं।
हम सब नाचते भी हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ते (ख) अहम् (ग) एषः (घ) ताः (ङ) आवाम्
2. (क) त्वम् कः असि? (ख) का पठति? (ग) काः खेलन्ति?
   (घ) कौ नृत्यतः? (ङ) के गर्जन्ति?
3. (क) धावति (ख) कूजन्ति (ग) खादतः (घ) नृत्यति (ङ) धावन्ति
4. (क) एताः कोकिलाः सन्ति।
   (ख) एषः शशकः धावति।
   (ग) सिंहः गर्जति।
   (घ) मयूरौ नृत्यतः।
   (ङ) ते खेलन्ति।

16 किम्/के/कानि

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक किम्, के, कानि शब्दों के बारे में छात्रों को समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह से पाठ से संबंधित दस-दस वाक्य बनवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

यह क्या है?
यह घर है।
ये दो क्या हैं?
ये दो घर हैं।
ये सब क्या हैं?
ये सब घर हैं।

यह क्या है?
यह चक्र है।
ये दो क्या हैं?
ये दो चक्र हैं।
ये सब क्या हैं?
ये सब चक्र हैं।
यह पुस्तक है।
ये दो पुस्तकें हैं।
ये सब पुस्तकें हैं।
ये सब क्या हैं?
ये सब फल हैं।
यहाँ सेब, केला, आम और नारंगी हैं।
यह पुस्तकालय है।
पुस्तकालय में पुस्तकें हैं।
बालक पुस्तकें पढ़ते हैं।
यह क्या है?
यह बगीचा है।
बगीचे में पौधे हैं।
पौधों में फूल खिलते हैं।
यह चाँद है।
वहाँ तारे भी हैं।
ये सब तारे आकाश में होते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) जलम् (ख) पुस्तकम् (ग) कदलीफलम्
   (घ) देवालयम् (ङ) एतत्
2. (क) पादपाः (ख) पुष्पाणिः (ग) नक्षत्राणि (घ) दुग्धं
3. (क) एतत् मम गृहम् अस्ति।
   (ख) एतानि मम पुस्तकानि सन्ति।
   (ग) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
   (घ) एतत् चक्रम्
4. (क) कदलीफलानि (ख) चक्रे (ग) उद्यानम् (घ) रक्षकः
   (ङ) पंकजम्

17 कुत्र/किम्

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक एक चार्ट तैयार करें, जिसमें संस्कृत भाषा में लिखित पाँच व्यावहारिक प्रश्न और उत्तर लिखे हों।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे आसानी से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

सैनिक क्या करते हैं?
सैनिक देश की रक्षा करते हैं।
अध्यापिका क्या करती है?
वह पाठ पढ़ाती है।
खरगोश क्या खाता है?
खरगोश गाजर खाता है।
पिता कहाँ जाता है?
पिता कार्यालय जाता है।
सौरभ क्या पढ़ता है?
वह अखबार पढ़ता है।
संजय क्या करता है?
वह पत्र लिखता है।
तुम सब कहाँ घूमते हो?
हम सब बगीचे में घूमते हैं।
छात्र कहाँ जाते हैं?
छात्र परीक्षाभवन में जाते हैं।

क्या तुम संस्कृत पढ़ते हो।
हाँ, मैं संस्कृत पढ़ता हूँ।
माता क्या पकाती है।
माता भोजन पकाती है।
दीक्षा क्या करती है?
दीक्षा नाचती है।
तुम दोनों कहाँ जाती हो?
हम दोनों मंदिर जाती हैं।
तुम क्या पीते हो?
मैं दूध पीता हूँ।
तुम कहाँ जाते हो?
मैं गाँव जाता हूँ।
वह कहाँ जाता है?
वह विद्यालय जाता है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) देशम् (ख) पाठम् (ग) गृञजनम् (घ) देवालयम्
2. (क) खादाव: (ख) गच्छति (ग) लिखति (घ) गच्छन्ति
3. (क) कुत्र (ख) किम् (ग) किम् (घ) कुत्र
4. (क) पत्रं (ख) भोजनं (ग) देवालयम् (घ) दुग्धं
   (घ) जनक: (ङ) अग्रज:

अभ्यास-पत्रम् उत्तरमाला

अभ्यास-पत्रम्

1. (क) कलमेन (ख) कार्यालयं (ग) पुष्पाणि
   (घ) परीक्षाभवनं (ङ) मयूरा:
2. (क) तडाग: (ख) विद्यालय: (ग) गृहम्
   (घ) पुस्तकालय: (ङ) क्रीडाक्षेत्रम्
3. (क) सैनिकौ: देशं रक्षत:। (ख) स: ग्रामं गच्छति।
   (ग) ते कदलीफलं खादन्ति। (घ) बालका: तीव्रं धावन्ति।
   (ङ) एतत् पुष्पम् अस्ति।

4. (क) सः – वह (ख) कुत्र – कहाँ

(ग) युवाम् – तुम दोनों (घ) अपि – भी

(ङ) कदा – कब (च) आवाम् – हम दोनों

(छ) तौ – वे दोनों

5. (क) यूयम् (ख) ते (ग) तौ (घ) त्वम् (ङ) वयम्

6. (क) सः पत्रं लिखति।

(ख) माता पचति।

(ग) अद्य बालदिवसः अस्ति।

(घ) अहं दुग्धं पिबामि।

(ङ) अंह फलं खादामि।

7. (क) आकाशे नक्षत्राणि भवन्ति।

(ख) शशकः गृञ्जनम् खादति।

(ग) जनकः कार्यालयं गच्छति।

(घ) अम्बा भोजनं पचति।

(ङ) दीक्षा नृत्याति।